शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वेदों में उपलब्ध संस्कारों का स्मृतियों में उपबृंहण

अनीस अब्बास रिज़वी (शोधार्थी)
संस्कृत विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

वेद दुनिया के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद है। बाद में यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व वेद है। चार वेदों में लगभग 18500 मंत्र है। ये मंत्र हजारों वर्षों से भारतीय जनमानस को प्रेरणा देते आ रहे हैं। कोई भी धार्मिक कार्य बिना वैदिक मंत्रोचार के पूर्ण नहीं होता है। मनुष्य जीवन भर संस्कारों का संचय करता रहता है। इन संस्कारों की चर्चा वेदों में विस्तार से की गयी है। इनका उल्लेख स्मृतियों में भी हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय धर्म, सभ्यता और संस्कृति के उदगम स्रोत वेद हैं जो भारतीय संस्कृति में चिन्तन और जीवन पद्धति को प्रेरणा देते हैं। इसी कारण वेदों को सम्पूर्ण मानव जाति के लिए कल्याणकारी माना गया है। प्राचीन काल से धर्म शब्द का अनेक अर्थों में प्रयोग हुआ है ऋग्वेद में धर्म शब्द का धार्मिक विधियों या धार्मिक क्रिया संस्कारों के रूप में प्रयोग प्राप्त होता है।**1** अथर्ववेद में धर्म शब्द का अर्थ निम्न अर्थ में प्रयुक्त हुआ है-

ऋतं सत्यं तपो राष्ट्रं श्रमो धर्मश्च कर्म च।
भूत भविष्य दुच्छिष्टे वीर्य लक्ष्मीर्बलं बले।।**2**

ऐतरेय ब्राहमण में धर्म शब्द सफल धार्मिक कर्तव्यों के अर्थ में प्रयुक्त हैं।**3** धर्म शब्द का अर्थ समयानुसार परिवर्तित होता दिखाई पड़ता है। अतः धर्म के विषय में कहा जा सकता है कि यह धर्म कर्तव्यों, बन्धनों का द्योतक मानव जाति के विशेषाधिकों, आर्य जाति के सदस्य की आचार विधि का परिचायक एवं वर्णाश्रम का द्योतक है। पूर्वमीमांसाकार जैमिनि ने धर्म को 'वेदविहित प्रेरक' अर्थात् वेदों में बनाए गए अनुसाशन के अनुसार चलना ही धर्म है। जैमिनि ने धर्म शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है-

चोदनलक्षणोऽर्थो धर्मः।**4** वेदों में जिन धार्मिक विधियों एवं धार्मिक क्रिया संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है, उन्हीं क्रिया संस्कारों का विस्तृत रूप धर्मशास्त्रों या स्मृतियों में उपलब्ध होता है। मानव के पुनर्निर्माण की जो वैदिक प्रक्रिया थी, वह संस्कारों की थी। वैदिक साहित्य में संस्कार शब्द का प्रयोग कहीं भी दृष्टिगत नहीं अपितु विवाह, गर्भाधान, उपनयन, अन्त्येष्टि आदि संस्कारों के अंगों का वर्णन प्राप्त होता है।

संस्कार

संस्कार शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से निष्पन्न हुआ है। संस्कार शब्द का अर्थ है पूर्ण करना, विशुद्धता, शिक्षा, सज्जा, प्रसाधन, अनुष्ठान आदि।**5**

छान्दोग्योपनिषद् में 'संस्करोति' शब्द बनाने या चमका देने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।**6** संस्कार

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वह है जिसके हो जाने पर व्यक्ति किसी कार्य के योग्य हो जाता है। मनुस्मृति में संस्कार के विषय में कहा है-

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च।।
गार्भै र्होमैजातकर्मचैऽमौंजीनिबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते।।**7**

गर्भाधान तथा अन्य संस्कारों की क्रियाएँ शरीर को शुद्ध करती हैं एवं इललोक और परलोक में भी मनुष्य को पाप से विमुक्त कराती है। विशिष्ट संस्कारों के किए जाने से व्यक्ति के जन्मगत दोष नष्ट हो जाते हैं। संस्कारों की संख्या के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है गौतम ने 40 संस्कारों की संख्या का निर्देष किया है।**8** मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्यस्मृति में संस्कारों को निश्चित संख्या का निर्देशन तो नहीं प्राप्त होता, अपितु गर्भाधान से अन्त्येष्टि तक के संस्कारों का सम्पूर्ण विधि विधान के साथ विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है।

मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति में संस्कार- मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार संस्कार है-

1.**गर्भाधान संस्कार**-वैदिक युग में इस संस्कार के प्रमाण प्राप्त नहीं होते अपितु ऋग्वेद **9** तथा अथर्ववेद**10** में गर्भाधान संस्कार का संकेत अवश्य प्राप्त होते हैं। गर्भाधान संस्कार को मनुस्मृति में निषेक नाम से अभिहित किया है-

निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः।
तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मि□ज्ञेयो नान्यस्य कस्याचित्।।**11**

याज्ञवल्क्यस्मृति में चतुर्थीकर्म नाम से इस संस्कार को जाना गया है-

निषेकाद्याः श्मशानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रियाः।।**12**

जिस कर्म के द्वारा पुरुष में अपना बीज स्थापित करता है उसे गर्भाधान संस्कार कहते हैं।

2.**पुंसवन संस्कार** - जिस संस्कार के द्वारा पुरुष सन्तान की प्राप्ति हो वह संस्कार पुंसवन कहलाता है। पुरुष सन्तान की प्राप्ति को वैदिक काल से श्रेष्ठ समझा जाता है। अथर्ववेद के अनुसार पुत्र को जन्म देने वाली माता श्रेष्ठ है।**13** पुंसवन संस्कार को करने के समय का उल्लेख याज्ञवल्क्य ने किया है-

गर्भाधानमृतौ पुंसः सवनं स्पन्दनात्पुरा।**14**

गर्भाशय में गर्भ के गतिशील होने से पूर्व यह संस्कार सम्पन्न करना चाहिए।

3.**सीमन्तोन्नयन संस्कार**- सीमन्त का अर्थ है केश तथा उन्नयन का अर्थ है उठाना है। इस संस्कार में स्त्री के केशों को ऊपर उठाकर बाँधा जाता है। याज्ञवल्क्य ने इसे केवल सीमन्त की संज्ञा दी गई है यह संस्कार छठें या आठवें महीने में सम्पन्न होना चाहिए-

षष्ठेऽष्टमे वा सीमन्तो।**15**

मनुस्मृति में सीमन्तोन्नयन संस्कार का वर्णन प्राप्त नहीं होता है।

4.**जातकर्म संस्कार**- यह संस्कार अत्यन्त प्राचीन है। वेदों में इस संस्कार का नाम नहीं है किन्तु अथर्ववेद में बालक के सुरक्षित तथा सरल जन्म के लिए सूक्त प्राप्त होते हैं।**16** वृहदारण्यक उपनिषद् में जातकर्म का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।**17** मनु ने भी जातकर्म संस्कार के विषय में कहा है कि-

प्रा□भिवर्धनत्पुंसो जातकर्म विधीयते।
मन्त्रवत्प्राशन चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम्।।**18**

पुरुष सन्तान का जातकर्म नाल काटने से पहले करने का निर्देष दिया है और इस को मन्त्रों से सुवर्ण, शहद और घी का प्राशन कराया जाता है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

याज्ञवल्क्य ने जातकर्म करने के समय का उल्लेख करते हुए कहा है-

मास्येते जातकर्म च।**19**

बालक के उत्पन्न होने के पश्चात जातकर्म संस्कार किया जाता है।

5.**नामकरण संस्कार**- नाम का मनुष्य जीवन में अत्यन्तमहत्व है। नाम से ही मनुष्य की पहचान बनती है। बृहदारण्यक उपनिषद् में नाम की महत्ता को बहुत संक्षेप में सुन्दरता से व्यक्त किया गया है।**20** शतपथ ब्राह्मण में सर्वप्रथम यह उल्लेख मिलता है कि उत्पन्न हुए पुत्र का नामकरण किया जाना चाहिए।**21**

मनु ने नामकरण के विषय में जो नियम दिए वह हैं - बालक का नामकरण दसवें या बारहवें दिन अथवा पुण्य तिथि वा मुहूर्त में वा गुणयुक्त नक्षत्र में कराये। ब्राह्मण का शर्मा युक्त, राजा का रक्षा (वर्मा) युक्त, वैश्य का पुष्टि प्राप्त और शूद्र का दास युक्त नाम रखना चाहिए।**22** याज्ञवल्क्य स्मृति में नामकरण संस्कार का समय दिया है-

अहन्येकादशे नाम।**23**

जन्म के ग्यारहवें दिन नामकरण संस्कार किया जाता है।

6.**निष्क्रमण संस्कार**- बालक को प्रथम बार घर से बाहर लाने का संस्कार ही निष्क्रमण होता है। वेदों अथवा वैदिक साहित्य में इस संस्कार का कोई संकेत प्राप्त नहीं होता है। मनु ने निष्क्रमण संस्कार का समय चतुर्थ मास में बालक को घर से बाहर निकालने का निर्देशन किया है।**24** याज्ञवल्क्यस्मृति में भी निष्क्रमण का समय चतुर्थ मास है।**25**

7.कर्णवेध संस्कार- इस संस्कार में रोगादि से रक्षा तथा भूषण या अलंकरण के निमित्त बालक के कानों का छेदन किया जाता है। मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्यस्मृति में इस संस्कार का वर्णन प्राप्त नहीं होता है।

8.अन्नप्राशन संस्कार-अन्न प्राशन संस्कार में शिशु को प्रथम बार अन्न दिया जाता है। जन्म के पश्चात् शिशु कुछ माह तक अपनी माता के स्तनपान पर ही आश्रित रहता है परन्तु धीरे-धीरे शिशु की भी वृद्धि होने पर उसे अन्न खिलाया जाता है। मनु ने अन्न प्राशन को अपने कुल की रीति के अनुसार करने का कहा है।**26** याज्ञवल्क्य ने भी कुल के नियमानुसार ही अन्न प्राश्न का निर्देष किया है।**27**

9.चूड़ाकर्म संस्कार- चूडाकर्म को चैलकर्म भी कहा जाता है। इस संस्कार के समय उच्चारण किए जाने वाले वैदिक मन्त्रों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वैदिक युग में भी यह प्रथा प्रचलित थी बाल काटे जाने से पूर्व सिर को गीला किए जाने का उल्लेख अथर्ववेद में प्राप्त होता है।**28** बालक की आयु, धन, बल एवं सन्तति के लिए स्वयं पिता के द्वारा बाल काटे जाने का संकेत यजुर्वेद में प्राप्त होता है।**29** मनु ने चूडाकर्म के विषय में कहा है-

चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः।
प्रथमेऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं श्रुतिचोदनात।**30**

याज्ञवल्क्य के अनुसार चूड़ाकरण कुल के अनुसार होना चाहिए।**31**

10.विद्यारम्भ संस्कार-बालक के शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाने पर विद्यारम्भ संस्कार किया जाता है।

11.उपनयन संस्कार-सम्पूर्ण संस्कारों में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्कार है। उपनयन का अर्थ है वह संस्कार जिसके द्वारा शिशु को विद्या ग्रहण के लिए आचार्य या गुरु के समीप ले जाया जाता है। यह संस्कार वैदिक काल से ही प्रतिष्ठित है। तैत्तिरीय ब्राह्मण**32** ऐतरेय

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ब्राह्मण**33** तथा शतपथ ब्राह्मण34 आदि में ब्रह्मचर्य अथवा उपनयन आदि के प्रसंग प्राप्त होते हैं। उपनयन संस्कार में यज्ञोपवीत की मूल भूमिका है। अतः इसे यज्ञोपवीत संस्कार भी कहा जाता है। मनुस्मृति में इस संस्कार का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है-

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम्।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशेः।
ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्य विप्रस्य प□चमे।
राज्ञो वलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे
आषोऽशाद ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते।
आद्वाविंशोत्क्षत्रबन्धेराचतुर्विंशतेर्विशः।।**35**

याज्ञवल्क्य ने भी उपनयन संस्कार के विषय में कहा है-

गर्भाष्टमेऽष्टमे वाऽब्दे ब्राह्मणस्योपनायनम्।
राज्ञामेकादशे सैके विशमेके ययाकुलम्।
उपनीय गुरुः शिष्यं महाव्याहृतिपूर्वकम्।
वेदमध्यापयेदेनं शौचाचाराश्च शिक्षेयत्।।**36**

प्रारम्भिक समय में ब्रह्मचारी उपनयन संस्कार लेकर शिक्षा प्राप्त कर लेने तक गुरु गृह में निवास करता था।

12.वेदारम्भ संस्कार-उपनयन संस्कार के बाद ब्रह्मचारी जब वेदों का अध्ययन प्रारम्भ करता था तब यह संस्कार किया जाता था। ब्राह्मणों को दक्षिणा देने के पश्चात् वेद का अध्यापन प्रारम्भ किया जाता था।

13.केशान्त अथवा गोदान संस्कार- केशान्त संस्कार में शिर तथा शरीर के अन्य भागों (कांख, दाढ़ी) के बाल साफ किये जाते हैं। मनु के अनुसार केशान्त संस्कार का समय है-

केशान्तः षोऽशे वर्षे ब्राह्मणस्य विद्यीयते।
राजन्यबन्धोर्दाविशे वैश्यस्य द्वयाधिके ततः।**37**

ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यों के लिए यह संस्कार क्रमशः सोलह, बाईस तथा चैबीस वर्ष की आयु में सम्पादन होना चाहिए।

14.समावर्तन संस्कार- वेदाध्ययन की समाप्ति पर समावर्तन संस्कार किया जाता है तथा यह ब्रह्मचर्य जीवन की समाप्ति का बोधक संस्कार है। अथर्ववेद में समावर्तन संस्कार का स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है।**38** मनु ने समावर्तन का विस्तृत विवेचन नहीं दिया है केवल इतना ही निर्देष दिया है कि-

गुरूणानुमतः स्नात्वा समावृतो यज्ञाविधि।**39**

ब्रह्मचर्य की समाप्ति उपरान्त गुरु की आज्ञा से विधिवत समावर्तन संस्कार करें। याज्ञवल्क्य ने समावर्तन के विषय में कहा है-

गुरवे तु वरं छत्त्वा स्नायादा तदनुज्ञया।
वेदं व्रतानि वा पारं नील्वा ह्मुययमेव वा।।**40**

वेदाध्ययन या व्रतों को पूर्ण करने के पश्चात् गुरु की आज्ञा से गुरु को दक्षिणा देकर ब्रह्मचारी स्नान समावर्तन करे। मनु तथा याज्ञवल्क्य दोनों ऋषियों ने समावर्तन करने की आयु का निर्धारण नहीं दिया है।

15.विवाह संस्कार-यह संस्कार संस्कारो में अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्कार है। भारतीय परम्परा में विवाह एक पवित्र बन्धन है। ऋग्वेद का विवाह के विषय में वर्णन है कि विवाह का जीवन सत्य और कर्तव्य पर प्रतिष्ठित होता है।**41** वैदिक कर्मकाण्ड का सबसे प्रमुख अंग यज्ञ है और यज्ञ में विवाहिता पत्नी का साथ बैठना अनिवार्य था। यज्ञ का सम्पादन पत्नी के अभाव में नहीं किया जा सकता है।**42** अतः विवाह संस्कार अनिवार्य है। मनुस्मृति में विवाह संस्कार का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है-

उद्वहेत द्विजो भार्या सवर्णा लक्षणान्विताम्।**43**

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गुरु की आज्ञा से अपने वर्ण की अच्छे लक्षणवाली कन्या से विवाह करना चाहिए। याज्ञवल्क्य स्मृति में भी विवाह का उल्लेख विस्तार से किया गया है-

अविप्लुतब्रह्मचर्या लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत्।
अनन्यपूर्विका कान्तासमपिण्डां यवीयर्सोम्।**44**

ब्रह्मचर्य से च्युत न हुआ शुभ लक्षणो वाली किसी अन्य पुरुष को न दी गई और पुरुष से अभुक्त सुन्दरी, असपिण्डं तथा (आयु एवं शरीर प्रमाण में) अपने से छोटी स्त्री से विवाह करना चाहिए। मनु तथा याज्ञवल्क्य दोनों ने विवाह के प्रकारों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।

16.अन्त्येष्टि संस्कार-यह मानव जीवन का अन्तिम संस्कार है। वैदिक काल में शरीर के अग्निदाह अथवा धरती में गाड़ देना दोनों प्रकार के उल्लेख मिलते हैं।45 मनुस्मृति में अन्त्येष्टि का उल्लेख करते हुए कहा है-

ऊनाद्विवार्षिक प्रेतं निदहयुबीन्ध्वा बहिः।
अलंकृत्य शुचै भूमावस्थि संचयनाद्वते।।**46**

बाद्यवों को दो वर्ष से कम आयु के मुर्दो को वस्त्रादि से अलंकृत करके घर के बाहिर शुद्ध भूमि में अस्थि संचय के विनाही गाड़ देना चाहिए।

निष्कर्ष

संस्कारों का उदय वैदिक काल से ही था, किन्तु वैदिक युग में इन कृत्यों को संस्कार की संज्ञा नहीं दी गयी थी परवर्ती धर्मशास्त्रों में इन्हें संस्कारों नाम से अभिहिताह किया गया। संस्कारों की संख्या के विषय में विद्वानों में मतभेद कहा है सर्वप्रथम गौतम धर्मसूत्र में चत्वारिशत संस्कारों का उल्लेख प्राप्त होता है। ऋग्वेद अथर्ववेद शतपथ ब्राह्मण बृहदारण्यक उपनिषद् आदि में गर्भाधान, प्रसव जातकर्म, चूड़ाकरण समावर्तन, विवाह आदि विभिन्न संस्कारों के विषय में वर्णन प्राप्त होता, इन्हीं संस्कारों का मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति में विस्तार से विवेचन प्राप्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 धर्मशास्त्र का इतिहास पी.वी. काणे, पृ. 3

2 अथर्ववेद, 9.9.17

3 धर्मस्थ गोप्ता जनीति तमभ्युत्कृष्टमेवंविदभिषेक्ष्यनेतयाचीभिमन्त्रयेत- ऐतरेय ब्राह्मण, 7.17

4 पूर्वमीमांसा सूत्र, 1.1.2

5 आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ0 1051

6 तस्मादेष एवं यज्ञस्तस्य मनश्च वाक् च वर्तिनी।
तयोरन्यतरां मनसा संस्करोति ब्रह्मा वाचो होता। छान्दोग्योपनिषद्,
4.16.12

7 संस्कारों नाम स भवति यस्मिन्, जाते पदार्थो योग्यः कस्यचिर्थस्य। जैमिनीसूत, 3.1.3

8 मनुस्मृति, 2.26-27

9 गौतम धर्मसूत्र, 8.14.1624

10 अथर्ववेद, 3.23.2
आ ते योनिं गर्भ एतु प्रमान बाण इवषुषिम्।
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशेमास्यः।।

11 मनुस्मृति, 2.16

12 याज्ञवल्क्यस्मृति, 1.10

13 पुमासं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम्।
भवासिं पुत्राणां माता जातानों जनयाश्ये यान्।। 3.23.3

14 याज्ञवल्क्य स्मृति, 1.11

15 वही

16 अथर्वेवेद, 1.11

17 बृहदारण्यकोपनिषद्, 1.5.1

18 मनुस्मृति, 2.29

19 याज्ञवल्क्य स्मृति, 1.11

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

20 यत्रायं पुरुषो प्रियते किमेनं न जहातीति नामेत्यनन्तं...
स तेने लोकं जयति। बृहदारण्यक उपनिषद्, 3.2.12

21 तस्मात पुत्रस्य जातस्य नाम कुर्यात् पाप्मानमेवास्य
तदपहन्त्येपि द्वितीयमपि तृतीयम्। शतपथ ब्राह्मण, 6.1.3.9

22 नामद्येयं दशम्यां तु द्वादश्यां वास्य कारयेत्
मण्ये तिथौ मुहूर्त वा नक्षत्रे वा गुणान्विते।।
म□ल्यं ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रियस्य बलान्वितम्।
वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्यं प्रेण्यसंयुतम्।। मनु0 2.30.31

23 याज्ञवल्क्य स्मृति, 1.12

24 चतुर्थे मासि कर्तत्यं शिशेर्निष्क्रमणं गृहात्।। मनु0 2.34

25 याज्ञवल्क्य स्मृति, 1.12

26 षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि यद्वेष्ठं म□लं कुले। मनुस्मृति 2.34

27 षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि। याज्ञवल्क्यस्मृति 1.12

28 अथर्ववेद, 6.68.1

29 यजुर्वेद, 3.33

30 मनुस्मृति, 2.35

31 चूड़ा कार्यायथाकुलम्। याज्ञवल्क्यस्मृति 1.12

32 तैत्तिरीय संहिता

33 ऐतरेय ब्राह्मण, 22.9

34 शतपथ ब्राह्मण, 3.10.11

35 मनुस्मृति, 2.36.38

36 याज्ञवल्क्यस्मृति, 1.14.15

37 मनुस्मृति, 1.65

38 अथर्ववेद

39 मनुस्मृति, 3.4

40 याज्ञवल्क्यस्मृति, 1.51

41 ऋग्वेद, ऋतस्य योनै सुकृतस्य लोके। ऋग्वेद 10.85.24

42 तैत्तिरीय ब्राह्मण-अयज्ञियो वा एष योऽपत्नीकः 2.2.2.6

43 मनुस्मृति, 3.4

44 याज्ञवल्क्यस्मृति, 1.52

45 ये निखाता ये परीप्ता ये दग्धा ये चैद्वताः।
सर्वास्तानग्न आं वह पितृन, हविद्ये अत्तेवे।।
अथर्ववेद, 10.2.34

46 मनुस्मृति, 5.62